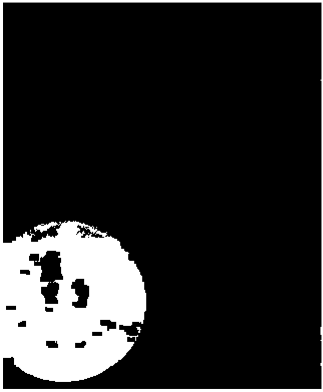

हिन्दुस्तानी एकेडेमी पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८११ ८

पुस्तक संख्या अवि|बु

क्रम संख्या १८०४५

कुछ नट बन्धों पर पुनः

हिस्सास दिल, जज्बातों का खजाना; महरूमियों का जमघट, मायूसियों का मेला, फलिसफाना ख्यालात का मजमुआँ जिहानत की इन्तिहा, दूर अन्देशी, 'खासे मौहब्बत का बेकिनार समुन्दर,, इन सबका यकजा करके जो बने बस वही 'अविनाश'' है ।

– एक हसीन शख्सियत द्वारा
लिखे गए एक यादगार खत
के कुछ अंश

छूटे तट बन्धों पर पुनः

(काव्य संग्रह)

अविनाश

रामानन्द प्रेस, काकरिया अहमदाबाद

प्रकाशक
रामानन्द प्रेस अहमदाबाद (गुजरात

अविनाश

प्रथम संस्करण
भाद्रपद सुद १, तीस अगस्त इक्यासी

मूल्य १२-००

मुद्रक श्री मारुति प्रिन्टिंग प्रेस, अहमदाबाद (गुजरात)

उन दस्तकों को
जो नजर अन्दाज
कर दिये जाते है

ितिज के हाशिए पर

ख छोटे हमने

राशा के हस्तलिखित परिपत्र

नो मेरे आहत संकल्प

तुम अवश्य पढ़ना

रे वे विकल्प

नि वे द न

किसी काव्य-संग्रह को सामान्यतः भूमिका की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए। विशेष कर स्वयं कवि द्वारा लिखी भूमिका में अहम्मन्यता दावे और धृष्टता अथवा 'सेल्फ डिफेन्स' का लहजा उतर आना असम्भव भी नहीं है। अपने बारे में तीसरे व्यक्ति की निःसंगता और निरपेक्षता धारण करके कह लेना सम्भवतः अत्यधिक दुरूह एवं चुनौती-पूर्ण भी हो जाता है। फिर भी पुस्तक से सम्बन्धित सामान्य पीठिका पाठक को रचना के सहानुभूतिपूर्ण पढ़ने समझने में सहायक भी होती है।

काव्य रचना की प्रक्रिया में अनुभूति अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण एक त्रिकोण है। रचइता की अनुभूति का अभिव्यक्ति पा लेना रचइता की अपनी सिद्धि हो सकती है पर वाचक या पाठक को अपनी उसी मनोभूमि के स्तर तक सहज ही ले आना रचना की सिद्धि है।

जिस प्रकार श्वासोच्छ्वास की सहज क्रिया जीवन को जीवित रखती है उसी प्रकार कवि के लिए काव्य-प्रणयन आत्मरंजन से अधिक एक अनिवार्यता बन जाती है, व्यक्तित्व की मुक्ति का माध्यम बन जाती है। अभिव्यक्ति की पीड़ा प्रसव पीड़ा बन जाती है और अपनी संवेदनाओं में रचनाकार संपूर्ण परिवेश से एकाकार हो जाता है। काव्य का विषय एवं संदर्भ सामाजिक विडम्बनाएँ भी हो सकती हैं चिरन्तन मूल्यों की पुनर्स्थापना का आग्रह भी स्थापित एवं प्रतिष्ठित मानव मूल्यों का व्यवस्थागत् विद्रोह भी। विषय की चारदीवारी, स्थितियाँ घटनाएँ, व्यक्ति एवं अनुभव ही हो सकते हैं। सभी रचनाकार के पहले भी साहित्य लिखा गया था उसके समकालीन भी लिखा जा रहा होगा और उसके बाद भी बहुत कुछ लिखा जाएगा। अज्ञेयजी के शब्दों में "संसार में कोई महान् कवि भी ऐसा नहीं हुआ जिसने कहीं से कुछ न लिया हो। आखिर शिक्षा मात्र दूसरों से कुछ ग्रहण करने की ही प्रक्रिया है। परम्परा भी उससे सम्बन्ध का नाम है जो पहले से मौजूद है, जो (दिया हुआ) है। और 'कविता में से कविता निकलती है' इस का अर्थ भी यही है कि प्रभावों का एक अपरिहार्य समूह सर्वदा मौजूद रहता है।" इतना होने पर भी हर रचनाकार की अपनी मौलिकता अपना वैशिष्ट्य तो होता ही है जो अनुकरण अनुसरण से परे है।

कविता एन्द्रिय, आत्म परक एवं निजी ही होती है। सम और विषम के बीच मानसिक तनाव तीव्रतम् जिजीविषा से पीड़ित मन, दुःख भरे जीवन से भोगते अहं से जन्मे अनगिनत प्रश्नचिह्न काव्य के नये निकष बन जाते हैं। इस रचना की यही विशेषता है कि अपने अन्तर के चिन्तन पर उसकी सत्य भी मन से जुड़ जाती है। इस स्तर पर रचनाकार के आह्लाद अवसाद कुण्ठा संत्रास रोष आक्रोश, अन्तः संघर्ष केवल उसके ही नहीं रहते सबके हो जाते हैं इसलिए के इस 'निजत्व' का दायरा केवल 'भोगे हुए यथार्थ' के यथार्थ चित्रण तक सीमित नहीं रहता।

पचास कविताओं का यह काव्य संग्रह मेरी सातवीं पुस्तक तथा पाँचवाँ काव्य-संग्रह है। पता नहीं कि पाँचों काव्य संग्रहों के रचनाक्रम से पढ़ने पर मेरे कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का कैसा चित्र प्रस्तुत होता है पर मैंने सत्य से ही अपनी अनुभूतियों को संवेदना के स्तर पर मुक्त रखकर उन्हें यथार्थ जीवन और से जोड़ने का प्रयास किया है। मेरी रचनाओं में मिठास भी है, कड़वाहट भी, व्यंग्य भी है, सहानुभूति भी है तल्खी भी पराजय पलायन विवशता अविश्वास और संत्रास भी है और चुनौती कर्मठता दृढ़ता और आत्मनिर्णय भी है। मेरे चिन्तन व सम्वेदना तथा अभिव्यक्ति पर ईमानदारी का लेबल लगाना मेरे पाठकों का काम है तथा उन्हें सम्प्रेषणीयता को सामाजिक सृजनात्मक दायित्व बोध की तुला पर रख कर परखना तथा शिल्प उपलब्धियों का मूल्यांकन करना मेरे समीक्षकों का काम है। मुझे अपनी सृजनशीलता का कोई प्रमाण पत्र भी नहीं चाहिए। मेरे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि जो देखा महसूसा मेरे सवेग क्षणों के आवेग के साथ शब्दों के माध्यम से सहृदय तक पहुँच सका। अस्तु!

> 'कुछ तो निशाँ शेष होंगे
> गुजरी बहारें कुछ तो कहती
> इस आशियाँ की कहानी
> कोई सुनेगा लहरों की बात
> तट से कभी तो जबानी''

—अविनाश

भाद्रपद सुद १   'कैलाश' कामायनी मार्ग
तीस अगस्त इक्यासी   अहमदाबाद (गुजरात)

अनुक्रम

१	यथार्थ और	१
२	सवमित मूल्यप्रेत	४
३	प्रश्नचिन्ह परिवेशों के	६
४	व अक	७
५	आस्था के अक्षयवट	९
६	परिदृश्य	१०
७	परिणति	१२
८	भीड़ से अलग थलग	१४
९	अनावृत प्रवंचना	१६
१०	दिया जलेगा रात भर	१७
११	उस की गली	१८
१२	अजगर सी बड़ी साँसे	२०
१३	सिकता प्राणों के	२२
१४	प्रतिबद्धता	२४
१५	रोशनी ने अन्धकार ही चुना	२५
१६	मन आगन	२७
१७	श्याम रंग	२९
१८	सपना जो सार नहीं	३१
१९	झरता नीर	३२
२०	खाली सेजवा	३३
२१	रस्ता है मेरा अजाना	३४
२२	बहता रहा मैं	३७
२३	पारदर्शी	३९
२४	खो रहा अतीत	४०
२५	मौत बार बार	४१
२६	याद तुम्हारी	४२
२७	नयन की कोर	४४

तुम्हारी गन्ध	४६
सूनी प्रतीक्षा	४८
उम्र की फसल कटी	०
सार्थक सदिग्धता	०१
आभ्यन्तर ग्रंथि	
प्रसंग च्युत	२
मोह बिन	४
हास ओ पराज्य	५५
अधरे पुकारे	५
धूप से क्या मिला	५८
मनुहार	६०
फागुन के दिन	६१
दिशा बिना	६४
नि शेष	६३
सिर्फ श्राप	६
चन्दनी लालसा	६६
हाँसिये	६८
शुभ्रवसना	६९
सार्थक	७१
दस्तकों के दुवारे	७२
हस्ताक्षरी आस्था	७३
आहटें अज्ञात	७९
मुस्कराहट कर्ज	७५

छूटे तटबन्धों पर पुनः

की रचनाएँ

की सौ वर्ष भावना (समीक्षा-१९७१)
ले तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह -१९७१)
निपात और टूटे हुए ऐवरेस्ट (काव्यसंग्रह-१९७१)
वाओं का त्रिकोण (काव्यसंग्रह १९७४)
र के सूरजमुखी (काव्यसंग्रह १९७७)
रूप (काव्यसंग्रह १९७८)
ों पर पुल (काव्यसंग्रह १९८१)

यथार्थ-बोध

टूटते प्रभंजनो के मोह भी
आँधिया चलीं मगर ठहर गयीं
मृत्यु से ही जिन्दगी अमर बनी
आग तो जली, भले ही बुझ गई

रोग है अगर निदान भी तो है
है समाज गर, विधान भी तो है
फैसले यहाँ अदालतें यहाँ
आँसुओं के साथ न्यामतें यहाँ

दो अलग अलग नियति है इसलिए
बो रहे है कुछ औ कुछ है काटते
सिर्फ अकेले सुखों को भोगकर
दुःख हम सभी से क्यों है बाटते

आज स्नेह प्रश्न-चिन्ह बन रहा
स्वार्थ के कगार भीड़ बढ रही
शब्द शब्द खुद ही कोश बन रहा
छन्द छन्द आज रागिनी नई

कौन मन्दिरों के द्वार जाए अब
भक्त खुद ही इष्ट बन गये जहाँ
कौन मंजिलों की अब करे फिकर
रास्ते स्वयं ही मंजिलें जहाँ

धार धार ही रहेगी जल नहीं
रात रात ही रही सुबह नहीं
शब्द अर्थ के बिना तो कुछ नहीं
छाँव के बिना ये धूप कुछ नहीं

याद जो रहे वही अतीत है
प्यास जिससे बुझ सके वो नीर है
पा सके वो क्या जो दे सका नहीं
छाछ जिन्दगी नहीं खमीर है

पोस्टरों को आदमी समझ के हम
पोस्टरों की जिन्दगी ही जी रहे
हम अहं के अक्षतों के जोर से
पत्थरों को पूजते ही जा रहे

ज्यों विराम पूर्ण हो लगा हुआ
वाक्य के बिना ही, ऐसी जिन्दगी
ज्यों ग्रहण गगन मे सबको दिख रहा
चन्द्र के बिना ही, ऐसी बन्दगी

सूखते गये समय के ताल भी
क्यों उदास शाम फिर सहम गई
दो सुरों के साथ लय की धुन बनी
नींद थी लगी, वो क्यो उचट गई

संक्रमित मूल्य-प्रेत

यहाँ अपवाद पूँजे जा रहे
है, नियम है वर्जित
यहाँ झूठी कहानी सत्य से
ही रही है चर्चित

यहाँ अपराध के हर देवता
का रूप है सुन्दर
यहाँ विश्वास की जलती
चिता पर हैं बने मन्दिर

यहाँ हर एक खुद से भागता
फिरता है अरसे से
यहाँ हर प्यार धोखा है
यहाँ सम्बन्ध नफरत के

यहाँ हर चीज बिकती है
यहाँ हर जाम है ग्वाली
यहाँ हर सेज विधवा है
यहाँ हर बाग बिन माली

यहाँ हर माँग सूनी है
यहाँ हर कोख है खाली
यहाँ भगवान झूठे है
यहाँ बेदर्द हर प्याली

चलो चलकर बसा ले
आज ऐसे एक फिर दुनिया
जहाँ हर एक का दुख
दूसरो के साथ पलता हो

जहाँ सूर्यास्त की किरणो
में नीडो का बसेरा हो
जहाँ पलको की छाया मे
किसी का नेह सम्बल हो

अगर सम्भव नहीं है इस
धरा पर, एक यह दुनियाँ
निरर्थक है बहुत निस्सार
है अब और यह जीना

प्रश्नचिन्ह-परिवेशों के

झुलस गये गंधों के चन्दन-वन
कसमों ने अधरों को सी डाला
बिखर गये अनुबन्धों के हर क्षण
प्रतिबन्धों ने आगत बुन डाला

अहसासों की खुशबू चुकी हुई
बीता कल अन्तर्मन भेद रहा
सुधियों की पाती मिली नहीं
बंजारा मन कब से भटक रहा

अन्धे सकल्पों की उलझन ने
बींध दिया तार तार प्राणों के
दाहक सलीबों ने बुन डाले
प्रश्न-चिह्न फिर से परिवेशों के

कोलाहल फिर अधी गलियों में
मिलकर सन्नाटों से सहम गया
सारे निर्वासित मन्सूबों को
झूठे इतिहासों ने निगल लिया

हार गये आस्था के पैगम्बर
सिकता ने सागर को सोख लिया
हर निश्चय सन्देहों के विषधर
तट ने हर लहरों को मौत दिया

बन्धक

ये सूनी सूनी निगाहे
जाने किसे ढूँढती है
बेहद उदासी की शामे
जाने किसे चाहती है

शायद इसी रास्ते पर
मरु ने डसा था नदी को
शायद यहीं से गुजर कर
सपनों ने भेंटा कफन को

पदचिन्ह यह कह रहे है
कोई तो निश्चित था आया
गुमसुम खिजाँ कह रहे है
तूफान बेशक था आया

हम प्यार जिसको समझते
शायद वह धोखा नजर का
अपना है जिसको समझते
वरदान है सिर्फ भ्रम का

हर एक आधा अधूरा
ढूँढा किये है स्वय को
बस आत्म-छल के सहारे
ऊँचा उठाये अह को

दम्भो के दर्पन जिन्हे हम
जन्मो से पाले हुए है
क्या फैसला वे करेगे
जो खुद हमारे लिए है

बन्धक जिसे रख चुके है
हम उसको कहते है अपना
हम जिससे रखते है पर्दा
हमराज कहते है अपना

गाँठो के धागे पिरोये
कसमो की बाहो को थामे
हम बाँटते जा रहे है
खट्टे कसैले फसाने

कितनी है गहरी उदासी
हर गन्ध लगती है बासी
साँझो की यह मीन रहती
जल मे, मगर फिर भी प्यासी

आस्था के अक्षय-वट

मै गति से आगे एक चिरन्तन ज्वाला
हर रात मुझी से ले जाती उजियाला

जिस तरफ पडे मेरे पग मजिल वहीं बनी
मेरे सग सग तूफान चले आँधियाँ चली
मै खुद अपने अम्बर-अवनी का निर्माता
है नियति खडी मेरे द्वारे मै हूँ दाता

मै अन्तहीन सलिला की ऐसी धारा
जिसने तट के शैवालो को ललकारा

तिनके डूबे मै तो लग गया किनारे पर
मै जिधर मुड़ा सकेत दिशाओ को देकर
मेरी अभिलाषा हहराती बढती नदिया
जो मेरे आडे आया उसको ध्वस्त किया

मै सतरगी सपनो की ऐसी काया
सबने जिसकी स्तुति मे गाना गाया

मैने सत्कारा आगत को पूजा कल को
मैने स्वीकारा दुख-दुविधा हर विपदा को
आँसू मेरे आगन मे आकर बरस गये
मेरी साँझो ने श्रापो से अभिषेक किये

मेरा जीवन है एक छलकता प्याला
हर प्यास मुझे पहनाती है वरमाला

परिदृश्य

अगले सफर पर
फिर से निकलने
हमको कहीं तो
रुकना पड़ेगा

साँसों का उपवन
फिर से महक ले
पतझर तो हमको
सहना पड़ेगा

चुकने दो प्याली
बहने दो तृष्णा
क्या हर्ज है जो
टूटी है वीणा

आएगा साकी
खाली जो प्याली
उपवन सजाने
आएगा माली

मूल्यों की दुनियाँ में
फिर से सँवरने
हमको किसी हाट
बिकना पड़ेगा

सावन की झरमर
फिर से बरस ले
धरती को यह ताप
सहना पड़ेगा

हम जीतकर हार को
भेंट ले क्यों
हम हार कर
जीत को प्यार देंगे

हम बोल कर क्यों
बढ़ाएँ व्यथा को
हम मौन को
गीत का जाम देंगे

परिणति

कितनी बचो है
कितनी है बीती
कितनी सजी है
कितनी है रीती

मन की ये बाते
साँसो की घाते
बोले बिना कुछ
तू सब सहे जा

कोई नहीं है
हमराज, साथी
ओठो पे हाँसी
दिल मे उदासी

बदरा बदाए है
धरती की ज्वाला
काँटे पिरोये है
धड़कन की माला

अगना अटारी
चुप्पी की मारी
माला बिना है
उपवन की प्याली

कितनी सही है
कितनी है झूठी
मीठी है कितनी
कितनी है तीखी

कसमो की बाते
चाँदी की राते
बिसरा के ये सब
बस अब जिए जा

भीड़ से अलग अलग

कोई मुझको रोक ले
इसलिए चला किया
कोई थोड़ा प्यार दे
इसलिए मचल लिया

वो लिए गुलाब फिर
क्यों बबूल उग रहे
पाँव में मेरे तो अब
सिर्फ दश चुभ रहे

मैं बहार के लिए
था कभी न आज हूँ
हर घड़ी भटक रहा
मैं वही बयार हूँ

साँझ फिर सँवर सके
रात के गले लगे
एक अमावस लिए
नयन छलकते रहे

सिर्फ साथ के लिए
मैं यहाँ रुका रहा
सिर्फ नेह के लिए
आज तक भटक रहा

भीड़ से अलग अलग
साझ से सुबह तलक
जाने कैसे आज तक
जी रहा है ये फलक

कोई मुझको थाम ले
इसलिए गिरा किया
कोई तो मना करे
बार बार पी रहा

अनावृत प्रवचना

इस कदर बढी चुभन
इस कदर बढी थकन
एक उदासी भरी
साँझ का है आगमन

क्यों है कह रहा ये मन
कोई साथ हो यहाँ
मौन टूट ले जरा
कोई बात हो यहाँ

दर्द सुनाता रहा
एक भयावह सपन
फिर कहीं सुलग उठी
साँस में बसी जलन

कब तलक बहा करूँ
कटकों की धार मे
कब तलक सहा करूँ
वेग औ प्रवाह मे

कोई तो पुकार ले
कोई तो सँवार ले
रास्ते मे रोक कर
हाल जरा पूँछ ले

आज मौन है पवन
आज धीर फिर गगन
बन गई है अनकही
एक कहानी अगन

दिया जलेगा रातभर

न साँझ वह न वह सहर
न अब रही हो वह नजर
किसे कहे हम अपना घर
किसे बनाये हम शफर

बिके हुए वसूल हैं
लुटे हुए हैं कारवाँ
जली हुई चिता है ये
थके हुए हैं आसमाँ

सचाई सिर्फ एक है
हरेक सुख सिसक रहे
कसम तले सदैव से
फरेब ही पनप रहे

नसीब है न ठौर वो
जहाँ सुकून मिल सके
चलेगा अब न दौर वो
कि बल फिर ठहर सके

सफर रुकेगा अब कहाँ
न कोई कह सका यहाँ
चले जो कल थे कारवाँ
रुके हुए हैं सब जहाँ

बहार ला रही कहर
सहे न जाएँ मुन्तजर
है जिन्दगी बनी जहर
दिया जलेगा रातभर

उम्र की गली

चाँदनी धुली धुली
द्वार खटखटा रही
बिन तुम्हारे आज मैं
द्वार कैसे खोल दूँ

एक गंध प्राण की
थी सदैव से यहाँ
तुम वही सुवास थी
तुम वही बहार थी

एक रंग स्नेह का
जो सदा बना रहा
तूलिका तुम्हीं तो थी
मैं तो चित्रकार था

उम्र की गली में फिर
हाट स्वप्न की लगी
बिन उमंग किस तरह
स्वप्न को सँवार लूँ

वक्त की मजार पर
फूल खिल रहे हैं क्या
बाग ही उजड़ गया
तब बहार आये क्यों

राख का वजूद तो
राख ही रहा सदा
सुन सके अगर न दिल
शोर से क्या फायदा

सर्द रात फिर यहाँ
लौट लौट आ रही
जो नसीब मे लिखा
कैसे उसे टाल दूँ

बहुत देर हो चुकी
आओ लौट हम चले
डबडबाये हो नयन
फिर भी अलविदा कहे

कहकहो का ये नगर
कितना उदासीन है
सुख यहाँ छले हुए
प्राण पराधीन है

चिरविदा की ये घडी
है मुझे बुला रही
तुम मिलोगे अब जहाँ
मै वहीं चला चलूँ

धरोहर सी यहाँ साँसे

बरसता ही रहा कल
रात भर सावन
किसी की याद में जैसा
छलछलाये आ रहा हो मन

ये कैसा मोह है उनसे
भुलाये भी नहीं भूले
ये कैसा दर्द है जिसमें
हृदय एकान्त में रो ले

ज्यों पुरवइया लिपटकर
एक सूनी डाल से रो ले
तरसता ही रहा कल
रात भर ये मन

तुम्हारे पास आने को
नहीं रहता कोई संयम
बरसता ही रहा कल
रात भर सावन

फटा कागज है ये जीवन
धरोहर ही यहाँ साँसे
विवशता की गली मे लग
रही है अनगिनत हाटे

मेरा आँचल तो है खाली
खरीदूँ क्या यहा आकर
अरे ! मै अजनबी हूँ कौन
खुश होगा मुझे पाकर

तरसता ही रहा अपनी
अकिंचनता से आजीवन
बरसता ही रहा कल
रात भर सावन

सिकता प्राणों के

जाने से फिर से तुम्हारे
मौसम दहल सा गया है
फूलों ने बिसरा महकना
सावन सहम सा गया है

सासों में उतरी दोपहरी
प्राणों में सिकता समाये
छूटी है फिर मन की गगरी
पलकों ने बादल बसाये

सपनों ने सच से कहीं की
दिल खोलकर दिल की बातें
मंजिल ने राहों से कह दीं
हमराज की चन्द बातें

क्यों हर मिलन के नसीबों
लिखा मुसलसल बिछुड़ना
क्यों जिन्दगी की तपिश को
पड़ता है हरदम सुलगना

माना कि हर दिन का सूरज
आते ही सझा के ढलता
आया है जो भी धरा पर
जाना भी उसको है पड़ता

लेते ही लेते थके हम
देने की बारी न आई
हम चाहते थे, उसे तो
अपनी कभी सुध न आई

तुमसे बिछुड़कर हमें क्यों
सूना हरेक पल लगा है
टीसों ने दिल का चहकना
खामोश क्यों कर दिया है

प्रतिबद्धता

दिशाएँ पूछती है क्या पता तेरा
हवाएँ पूछती है क्या निशाँ तेरा
तुझे बस याद कर रोता है सावन
यह धरती तप रही तुझ बिन अगन बन

खिजाँ बेचैन है कितनी तेरे बिन
हुई मजबूर राते दहकते दिन
क्या ये मुमकिन नहीं तू लौट आये
मना लेंगे तुझे जो मान जाये

ये बढती उम्र साँसो का ये मेला
बिना तेरे सफर कितना अकेला
बिना तेरे उदासो का ये आलम
बिना तेरे जिए तो क्या जिए हम

ये मुमकिन है जो दिन इक रोज आए
तेरे बिन साँस का क्रम टूट जाए
मेरे सपने तुम्हारे पास होंगे
मेरी आस्था तुम्हारे साथ होगी

जनम इक और ले गे इस धरा पर
तुम्हे इक बार तो पाकर रहे गे
बदल लेंगे लकीरे हम नियति की
तभी सपने हमारे पूर्ण होंगे

रोशनी ने अन्धकार ही चुना

थक चला हूँ मैं तुम्हें पुकार कर
रुक गया प्रभंजनों से हार कर
राह को न मंजिलों की अब कदर
ढा रहे हैं आंधियाँ हो कहर

जाने किसकी बाट जोहते हुए
वक्त लौट लौट कर ठहर गया
वो सुबह के आगमन में देर थी
उम्र का चिराग फिर भी बुझ गया

आँसुओं की ये फसल पनप रही
किस कदर उदास फिर ये शाम है
मौन के अधर पे सिसकियाँ भरीं
छाँव के नसीब सिर्फ घाम है

बिन दिशा ही ये पवन भटक रहा
मंजिलों बिना ही कारवाँ चला
साँस की ये नाव साहिलों बिना
रोशनी ने अन्धकार ही चुना

है हताश ख्वाब के कफन यहाँ
प्यार कुछ नहीं फकत सितम यहाँ
जाल है फरेब के सुलभ यहाँ
पतझरों को राजदाँ मिले कहाँ

बुझ चला हूँ प्यास के अँगार बन
है बजद रास्त का, है आँच कम
कल को आज का गिला है, प्यार कम
क्या कहूँ है कब से अपनी आँख नम

मन आँगन

हरियाली बिछी बिछी
सावन पहुना रे
भीगी बौछार लिये
बदरा फिर आ रे

भू-अम्बर एक हुए
मिलन राग बजते
तरुणायी के नयनों
सपने फिर सजते

घूँघट की ओट
लिए रसवन्ती जैसे
बिन बोले नयनों के
सैन चले ऐसे

अग अग मादकता
बिखरी है जल थल
प्रकृति नटी पावस में
झूम रही पल पल

इतना मन क[illegible]
इतना रस कौन [illegible]
पी लेने को [illegible]
अपना जब जहाँ मिले

[illegible] पुरवइया फिर
डार डार डुलाए
मन आगन फिर बरसे
बदरा ये रतनारे

श्याम रंग

आंगने फुहार [illegible]
पलकों [illegible] सा [illegible]
मेघ [illegible] घुम[illegible] र[illegible]
प्राण [illegible] राधा [illegible]

[illegible] कहीं अमराई
कुहु कुहु टेर रही
पावस की पुरवायी
मन-गागर छलक रही

बूँदों में नूपुर के
नृत्य-बोल ठुमक रहे
निर्मोही की सुध फिर आई

सिसकारी मारे है
फिर से क्या बँसवारी
पियू कहाँ पियू कहाँ
पपिहा फिर दुखियारी

पेगों मे कजरी के
नेह गीत बरस रहे
अल्हडता ने ली अँगडायी

अलकों से बदरी ने
श्याम रग चुरा लिए
यादों की फिर बरात आई
आँगने फुहार लौट आई

सपना जो साथ नहीं

१००४५

जाने क्यों मेरे ही आँगन मे
लौट लौट आती है ये बैरिन पुरवइया

सतरंगी सपनों की ओट लिए
छुमक रही रंगों की दुलहनिया
नयनों से छलक रहा जाम लिए
हुलस रही प्राणों की कोयलिया

जाने क्यों बार बार पावस मे
छलक छलक आती है नयनो की गागरिया

कोई था अपना जो पास नहीं
कैसा था सपना जो साथ नहीं
यों कहने को कुछ भी बात नहीं
यह कैसा दिन जिसकी रात नहीं

जाने क्यों हर आहट के सग सग
ठहर ठहर जाती है पैरों की पायलिया

[illegible]

पुरवइया सन-सनन सनन-[illegible]
सावन करता है [illegible]
झरता नीर [illegible]
रस से भरे हुए [illegible]

[illegible] सागर प्रमुदित मन
[illegible] फिर नन्दन
[illegible] का सरगम
[illegible] का पचम

दादुर, झींगुर [illegible]
महक उठे फिर से [illegible]
घन सत्कृति को [illegible]
भू पर उतरे [illegible]

[illegible] के टूटे [illegible]
[illegible]-कण
[illegible] के आलिंगन
[illegible] से [illegible]

निश्छल निर्मल [illegible]
ज्यों शिशु को [illegible]
भू पर नभ के [illegible]
विरहिन की श्वासा [illegible]

उठे तट-बन्धों पर पुन

खाली सेजवा

घुमड़ रहे नभ में [illegible]
बैरी सावन पी [illegible] दुवारे
अगनी जियरा की [illegible]
मन मोरा रह रह के [illegible] अकुलाये

बिन साजन सूनी है ये रैना
खाली सेजवा बनी विष की बैना
चुभते तन में क्यों कजरी के नारे
बैरी [illegible] काहे आयो दुवारे

कैसे कजरा लगाऊँ मैं [illegible]
कासे कह दूँ मैं [illegible]
कैसे होके सुहागन [illegible]
कब से आई न पी [illegible]

धधके फिर से [illegible] यादों के सारे
बैरी सावन पी [illegible] काहे आयो दुवारे

रास्ता है मेरा अजाना

देश है ये बेगाना ऽ ऽ
हूँ मैं सभी से अजाना

कौन है जो मुझे
राह में रोक कर
कुछ तो अपनी कहे
कुछ हमारी सुने

गन्ध भी है यहाँ
है बहारें यहाँ
बीच मजधार भी
है किनारे यहाँ

भीड भी है यहाँ
हाट भी है यहाँ
अजनबी है बहुत
सिर्फ अपना नहीं
कोई अपना नहीं

सिर्फ अपने लिए
जो जिए, क्या जिए
फूल एकान्त में
जो खिले, क्या खिले

वो अभागे थे जो
मेघ बरसे नहीं
व्यर्थ है वे नयन
जो कि छलके नहीं

राह में जो अकेला
ही चलता रहा
क्या नहीं खुद की
अर्थी वो ढोता रहा

बिन सुने सास की
दास्तां, चुक गई
बिन जले दीप की
आस्था बुझ गई

बिन पढ़े जिंदगी के
वरक चुक गए
रात आने के पहले ही
दिन चुक गये

टूटे [illegible] हैं यहाँ
छोटे [illegible] बड़े
सब मेरे मगर फिर
भी, कुछ तो नहीं
हाय ! कुछ भी नहीं

है कहाँ मुझको जाना ऽ ऽ
रस्ता है मेरा अनजाना
है वो साथी कहाँ
साथ जो चल सके

कुछ हमारी सुने
कुछ तो अपनी कहे

देश है ये बेगाना ऽ ऽ

बहता रहा मैं

तन मेरा प्यासा
मन मेरा [illegible]
मेरी अखियाँ [illegible]
चलता रहा हूँ [illegible]
मेरी न कोई निशानी

मैंने तटों का रस्ता सराहा
तट ने मुझे ना पुकारा
[illegible] में लहरों के धारे
मुझको मिला ना किनारा

मुझको खुशी का साथी मिलेगा
मैंने [illegible] से निभाया
तनहा मुझे छोड़कर चल दिये सब
सबने कहा मैं बेचारा

सूरज न देता अब तो संदेसा
चंदा न लोरी सुनाये
दस्तक तो दी थी कोई न बोले
जब भी गया मैं दुवारे

ऐ हुए देव माने न मुझसे
गयी पूजा अधूरी
नी उमरिया भी अब मुझसे रूठी
स मिटे इतनी दूरी

सच को मिले थे सपने सजीले
सपनों से भेंटी जुदाई
रजनी अमावस के बस हो चली है
कैसे खिले अब जुन्हाई

साहिल समझ कर हम जब भी पहुँचे
साहिल ने मुझको डुबोया
ममता की डोरी में बँध कर चले जब
अपनों ने मुझको रुलाया

छूटे सम्बन्धों पर पुन

पारदर्शी

न जाने किसने लिख दिया
मेरे नसीब मे सफर
मिला सुकून ना सिला
मिला न मुझको हमसफर

समझ रहे थे हम जिसे
वो ओंस, सिर्फ धूप थी
जिसे सुवास कह रहे
कफन मे लिपटी धूल थी

न जाने किसने कह दिया
कि ख्वाब ही है जिन्दगी
लुटी जहाँ पे आस्था
समझ रहे है बन्दगी

खुद अपनी कब्रगाह पर
जला रहे थे हम दिये
हम अपने इन्तकाल पर
रचा किये थे मरसिये

न जाने किसने कह दिया
न रात के लिए सहर
न हमने फिर किया गिला
पिया किया सदा जहर

रूठे हुए देव माने न मुझसे
रह गयी पूजा अधूरी
ठगिनी उमरिया भी अब मुझसे रूठी
कैसे मिटे इतनी दूरी

सच को मिले थे सपने सजीले
सपनो से भेंटी जुदाई
रजनी अमावस के बस हो चली है
कैसे खिले अब जुन्हायो

साहिल समझ कर हम जब भी पहुँचे
साहिल ने मुझको डुबोया
कसमों की डोरी मे बँध कर चले जब
अपनों ने मुझको रुलाया

पारदर्शी

न जाने किसने लिख दिया
मेरे नसीब मे सफर
मिला सुकून ना सिला
मिला न मुझको हमसफर

समझ रहे थे हम जिसे
वो छाँव, सिर्फ धूप थी
जिसे सुवास कह रहे
कफन मे लिपटी धूल थी

न जाने किसने कह दिया
कि ख्वाब ही है जिन्दगी
लुटी जहाँ पे आस्था
समझ रहे हैं बन्दगी

खुद अपनी कब्रगाह पर
जला रहे थे हम दिये
हम अपने इन्तकाल पर
रचा किये थे मरसिये

न जाने किसने कह दिया
न रात के लिए सहर
न हमने फिर किया गिला
पिया किया सदा जहर

ओ [illegible] अतीत

यह कैसा [illegible] है यहाँ
यह कैसी [illegible] [illegible] रही
जहाँ [illegible] [illegible] रही
वहाँ [illegible] मैं हूँ [illegible]

खुले खुले गगन तले
[illegible] पंख तोलते
ले [illegible] नीड के सपन
जिन्दगी के जो हो लिए

अटल [illegible] से हर कदम
ठहर [illegible] है हर डगर
चल [illegible] [illegible] सफर
[illegible] किया [illegible] के नगर

[illegible] हो रहा अतीत को
[illegible] [illegible] आग में
[illegible] लगी कोई सुबह
[illegible] [illegible] अंधकार में

[illegible] कैसा [illegible] [illegible]
कि [illegible] नहीं [illegible] देखते
कहाँ [illegible] कहूँ उसे
जो मौत से [illegible] गिरी

मौत बार बार

स्वप्न के सफ़र खतम हुए नहीं
प्रश्न बन खड़ी रही ये ज़िन्दगी
दास्तान सुन सका कोई नहीं
शूल बन गई हरेक बन्दगी

सर्प-दंश बाँटती है चाँदनी
बाँसुरी उदास हुई है रागिनी
प्यास रात की सदा कफ़न बनी
दस्तकों के पास अब कोई नहीं

शब्द ढूँढते हरेक मौन है
अर्थ ढूँढते हरेक शब्द हैं
हर असत्य दर्पणों में बस गया
आहटों से हर विगत सहम गया

दीप सिर्फ रात के लिए सही
मौत बार बार के लिए सही
पुष्प अब मज़ार के लिए सही
क्या हुआ जो दिल की बात अनकही

याद तुम्हारी

जब कोई बौराई पुरवइया
दिशा भटक जाती है
सावन की कोई बादरिया
जब घुमड़ बरस जाती है

तन की ज्वाला ऐसे में क्यों
मन को डस डस जाती है
जाने क्यों तब मुझको बरबस
फिर याद तुम्हारी आती है

धरती को बाहों में भरने
जब जब नभ धरती पर उतरा
जब प्राणों को पावन करने
सावन बूँदें बनकर बिखरा

जब कोई राधा बिन
मोहन, अँसुआती है
जब मरु की याद किसी
सावन को आती है

स्मृतियों की पाती देने
प्राणों का हरकारा पहुँचा
कुहरा ओढे जब पछुवा ने
अलसाया सूनापन बरसा

जब अनहोनी होनी
बनकर रुक जाती है
जाने क्यों तब मुझको बरबस
फिर याद तुम्हारी आती है

नयन की कोर

जब कभी प्रभात की
सप्त किरन बावरी
ढूँढती हुई तुम्हें
द्वार मेरे आ गई

मैं गगन की ओट से
मैं क्षितिज की छोर से
मैं नयन की कोर से
पुकारता चला गया

मैं तुम्हारी याद का
दुलारता चला गया

जब कभी मल्हार की
डूबती हुई कड़ी
गीत की फुहार ले
प्राण में समा गई

मैं तुम्हारी राह को
मैं तुम्हारी चाह को
मैं तुम्हारे प्यार को
सराहता चला गया

मैं तुम्हारी आरती
उतारता चला गया

जब कभी बयार ने
एक महकती गली
राह खोजती हुई
पास से गुजर गई

स्नेह नीड में कहीं
पल रात रह सकूँ
हर पड़ाव हर डगर
निहारता चला गया

मैं तुम्हारी चाह में
गुहारता चला गया

तुम्हारी गन्ध

कि जब भी दिन ढला यहा
उदास शाम आई है
न जाने क्यो बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

किसी के जागते नयन
औ रात का ये सिसकना
कहीं पे भोर के सपन
औ दीप का ये सुलगना

कि जब भी साँस को मेरी
तुम्हारी गन्ध आई है
न जाने क्यो बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

ये वादियो में उठ रहे
अतीत के बुझे धुँए
ये रात भर बरस रहे
पलक किसी के अधमुँदे

छूटे तट-बन्धों पर पुन

कि जब किसी की बात में
तुम्हारी बात आई है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

क्षितिज के कगार पर
खिलन की है ये बेबसी
क्यों 'अंत' के सवाल पर
नियति खड़ी है हँस रही

कि जब भी प्यास की कथा
किसी ने भी सुनायी है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारा याद आई है

सूनी प्रतीक्षा

तुम जब भी आना
इनसे ज़रा मिलके आना

सूना सा आंगन
खाली सी ड्योढ़ी
रूठे से साजन
रीती सी गगरी

तुमको मिलेगी
डूबी सी सझा
दस्तक बिना कोई
सूनी प्रतीक्षा

तुम को कसम है न आँसू बहाना
तुम जब भी आना

कब से [illegible] दर
सूना है [illegible]
सदमों से [illegible]
सिसकता है फागुन

वैभव है आहत
झूठा अनागत
कैसे करे कोई
खुद का ही स्वागत्

टूटा बसेरा
उजड़ी सी डाली
झंझा को लेकर
आया था माली

क्यों सावन के बिन ही
लिक्खी हो सज़ा
आंखियों बिन ज्यों
दर्पण हो गया

सुर के बिना ही छेड़े जब भी गाना
तुम जब भी आना

कुछ तो निशाँ शेष होंगे
गुज़री बातें कुछ तो कहेंगी
इन आँसुओं की कहानी
कोई सुनेगा प्यार की बातें
हट से कभी तो जवानो

तुमको कसम है हौले से सुनना
तुम जब भी आना

उम्र की फसल कटी

प्यास को सवारने
दर्द को निखारने
फूल फिर सिसक रहा
कटकों के सामने

फिर बहार खिल सके
गन्ध फिर महक सके
इसलिए गुजर गये
पतझरों के काफले

चाँदनी का दीप ले
रात बाट जोहती
आँसुओं के ओस से
फिर नई दुबह हुई

उम्र की फसल कटी
साँस आज थक गई
लालसा के आँगने
फिर से साँझ ढल गई

स्वप्न को सरहाने
प्यार को दुलारने
प्राण फिर पिघल रहा
नियति के उलाहने

सार्थक संदिग्धता

सदेह के नाग तुमने
इतने जतन से है पाले
जनमों के ये फासले भी
सशय ने ही है सँभाले

मारे जहर ही जहर को
दस्तूर है यह खुदा का
है बिन यकीं दोस्ती भी
जैसे महल रण्डहरों का

जो गन्ध भी दे सके ना
बेसूद ऐसी बहारें
जो दर्द भी सह सके ना
बेमर्ज ऐसी फुहारें

रिश्तो की खाँई बढाते
हम जा रहे अब भी आगे
गाँठो के नगमे है गाते
तोडे हमी ने थे धागे

लमहों के जो साल तुमने
रजिश सँजो कर सँभाले
कडवाहटो ने उन्हें ही
दामन मे अपने है पाले

आभ्यन्तर ग्रन्थि

जो दहक चुकी नहीं है आग वो
राख हो चुकी नहीं है आग वो
प्यास प्यास है तभी बुझे नहीं
सेज मीत बिन भला सजे कहीं

बेबसी न बाँटने से बट सका
शर्त साथ प्यार के न चल सकी
मुफलिसी मिली अगर खुदी मिली
दोजखों की चौखटें हमें मिली

आसमाँ तरस रहे जमीन को
औ पवन दिशा बिना भटक रही
शब्द अर्थ के बिना तरस रहे
मेह रेत में ही क्यों बरस रहे

मन्दिरों में अजगरों का वास है
हर यकीन के लिए तो श्राप है
बेवफा हुए वफाओं के सिले
मान के बिना भी मौत हो मिले

मुख्तलिफ निगाह राह मुख्तलिफ
फिर भी हम समझ रहे कि साथ है
जो दरख्त छाँव दे सके नहीं
हम उन्हें समझ रहे मुकाम है

प्रसंग च्युत

जो मेरे पास है नहीं
वो मेरा कहीं भी नहीं
हमें हुआ है अब यकीं
है कोई मुन्तजिर नहीं

हरेक साँस अब को
बनी हुई है दास्ताँ
गये नजर बचा के सब
किसे समझ ले मेहरबाँ

डराने हमको हैं लगे
ये साये खुद के जिगर के
वो राह कहाँ बढ़ेंगे
तो काफिले रुके रहे

बहारें जो रहीं नहीं
वो हमको याद क्यों रहीं
खिजाएँ कितनी दिलकशी
जो अश्क के गले लगीं

अगर कोई मेरा नहीं
तो एक आसमाँ जमीं
है जिन्दगी की आजिजी
न वक्त अब रहा [illegible]

मीत बिन

कौन कहता है जीवन है सपना
कोई भी तो यहाँ है न अपना
मंजिले राह को छल रही है
छाँव के है नसीबों मे तपना

हर नयन है यहाँ छलछलाये
मीत बिन प्राण है सूने सूने
हर पवन बिन दिशा है भटकती
हर अगन साँस सँग है सुलगती

आस के है नसीबों निराशा
क्या था बोया औ क्या हमने काटा
साँस के कर्ज अब भी है बाकी
मौत शायद इसी से न आता

भ्रम हुए जा रहे मोह सारे
फीके लगते है उत्साह सारे
हर नजर है उदासी भरी क्यों
हर सहर इतनी गमगीन है क्यों

खो गया जो उसे हम बिसुरते
पास जो, दूर हम उससे रहते
सच तो यह हम न खुद को समझते
फैसले फिर भी हम सबके करते

हास ओढ़े पराजय

क्या कहूँ बात फिर भी अधूरी यहाँ
है निकट फिर भी कितनी है दूरी यहाँ
मिल के बिछुड़े सभी हँस के रोये सभी
सेज काँटों को हम फिर भी सोये यहाँ

जो हकीकत थी वह हम बिसर ही चले
इक अधूरी कहानी थे दुहरा रहे
बेखबर दर्द से जख्म रिसते रहे
एक बुझती निशानी थे सहला रहे

क्या करूँ हास ओढ़े पराजय यहाँ
हर कसम झूठ की करती वादे यहाँ
दिल के हाथों सभी हैं विवश आज भी
हम कफन से लिपट करके रोये यहाँ

अँधेरे पुकारे

मौसम के प्रहरी अनेरे
बीते हुए कल को टेरे
फागुन के गीतों में सोये
जैसे प्रणय के हों फेरे

अथ को न सीमा सुहाये
कटिबन्ध नगर न बाँधे
कल की लगन यहाँ पर
इतिहास को फिर से लाँघे

बौनी हुई है दिशाएँ
मन ज्यों थका सा जुआरी
दर्पन बसाये [illegible]
कजरी कसैली खुमारी

गहरी हुई फेर उमस ज्यों
बढ़ते [illegible] वर्षों के साये
रग रग में ज्यों ज़िन्दगी के
दर्दों के जुगनू समाये

छूटे तट-बन्धों पर पुन

लुटती यहाँ बहारें
घुटती है सपनों की साँसें
हम सिर्फ ढोते रहे हैं
गुजरे हुए कल की यादें

कब कहाँ तक सँभाले
जहरीले साँसों के बोझे
मायूसियों के दुलारे
हमको अँधेरे पुकारे

धूप से क्या गिला

थक गया हूँ मगर
मैं नहीं रुक सका
कब से चलता रहा
सिर्फ चलता रहा

कंटकों का डगर
धूप से क्या गिला
राह में जो मिला
प्यार से मैं मिला

ढूँढ कर ये नयन
झेल मन की जलन
ले दुआ की दवा
क्यों बिसारे सपन

जो बदा था हुआ
जो लिखा था मिला
रोशनी जब न दे
तो अँधेरा भला

दिन तपा हो तभी
साँझ आती यहाँ
तन थका हो तभी
नींद आती यहाँ

दो घड़ी का मिलन
आओ हँस बोल ले
कौन जाने कभी
फिर मिले ना मिले

रह सके जो अँधेरे
सदा याद में
आओ ऐसे अँधेरों
से मिलकर चले

मनुहार

बहुत ब[illegible] [illegible] [illegible] आज
तुम अपने प[illegible] [illegible] दो
आँचल के [illegible] [illegible] अपने
मुझको [illegible] [illegible] लो

सहे न जाते मौसम मुझसे
दश [illegible]री है यह पुरवायी
मनुहारो की प्यासी चितवन
[illegible] रही है आज जुन्हायी

भीगे कोरो का आवाहन
बाट देखता है यह सावन
ममता के [illegible] मे अपने
मुझको आज [illegible] लो

घिर घिर आता है जब मेरे
मन का सूनापन आगन मे
बरस बरस जाते तब कितने
सावन भादों मेरे मन मे

सूने दिन लम्बी है राते
कहने को है कितनी बाते
आज धड़कते [illegible] की
अपने हृदय [illegible] लो

टूटे तट-बन्धों पर धुन

फागुन के दिन

माँगे बिन मिली यहाँ
कभी घृणा कभी प्यार
माँगे से मिला नहीं
कभी कफस को मजार

कोई माने अपना
बेगाना क्यों दूजा
हाय ! कहीं निष्फल है
प्राणो की भी पूजा

कहो धूप छाव तले
कहो राह गाँव तके
जनम जनम दुलहनिया
साजन की बाट तके

हार किये बैठी है
फूलो का सा शृगार
राह कहो मजिल से
हो जाती जार जार

सावन बिन मिले यहाँ
कैसे रस की फुहार
फागुन के दिन होते
जीवन मे सिर्फ चार

दिशा बिना

हरेक शब्द अर्थ बिन
अनाथ बन के रह गया
हरेक शरीर प्राण बिन
चिता से जा गले लगा

चिराग जल के बुझ गये
निशान बन के मिट गये
क्यों आज के ललाट पर
निशान कल के रह गये

दिशा बिना भटक रहे
परेरू प्राण के यहाँ
न पेड़ है न डाल है
टिके कहाँ ये आशियाँ

न वह सफर न वो समाँ
न वह जमी न वह फिजाँ
न मंजिलों का है पता
कहाँ चला ये कारवाँ

सिसक रहा न जाने क्यो
हरेक दिन का हर पहर
सुलग उठा है फिर कही
ये सर्द रात का कफस